12. अविकारी शब्द

हिंदी भाषा में कुछ शब्द ऐसे हैं जो कभी नहीं बदलते। इनका प्रयोग ज्यों का त्यों ही होता है। इन पर लिंग, वचन, कारक, संज्ञा आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, इन्हें अविकारी शब्द यानी जिनमें कोई विकार न हो, कहा जाता है। इन शब्दों को अव्यय भी कहते हैं।

शिक्षण-संकेत

- ❖ शिक्षक/शिक्षिका सर्वप्रथम बच्चों को अविकारी शब्दों से अवगत कराएँ। पाठ पृष्ठ 74 पर दिए वाक्यों के उदाहरण शब्द तेज़ द्वारा अविकारी शब्द स्पष्ट रूप से समझाएँ।
- ❖ अविकारी शब्दों के चारों भेदों से परिचित कराएँ। एक-एक करके सभी का विस्तारपूर्वक वर्णन करें।
- ❖ शिक्षक/शिक्षिका पाठ पृष्ठ 74 पर दिए चित्रों के वाक्यों को पढ़वाएँ और उनमें आए रंगीन शब्दों इधर, थोड़े, जल्दी, रोज़ पर बातचीत करें। समझाएँ, ये शब्द हम रोज़ाना प्रयोग में लाते हैं। क्या आप जानते हैं, ये शब्द अधिकतर क्रिया शब्दों के लिए ही प्रयोग किए जाते हैं। ये शब्द क्रिया की विशेषता को बताते हैं। इन्हें ही क्रियाविशेषण कहते हैं।
- ❖ समझाएँ, कोई काम कब, कहाँ, कैसे या कितना हुआ या हो रहा है, क्रियाविशेषण शब्द इस बात को बताते हैं।
- ❖ बच्चों को क्रियाविशेषण के भेदों - कालवाचक, स्थानवाचक, परिमाणवाचक तथा रीतिवाचक पृष्ठ 75-76 से अवगत कराएँ। इसके लिए दैनिक गतिविधियों अथवा कामों के वाक्यों को उदाहरण के रूप में प्रयोग कर सकते हैं।
- ❖ सुनिश्चित करें, बच्चे आसानी से समझ पा रहे हैं।
- ❖ बच्चों को अव्यय के अन्य भेदों– संबंधबोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादिबोधक शब्दों से अवगत करवाएँ।
- ❖ बताएँ, ये सभी अव्यय शब्द हैं। इनमें कभी कोई परिवर्तन नहीं आता।
- ❖ पाठ पृष्ठ 77-78 पर दिए उदाहरणों द्वारा इन्हें समझाएँ।
- ❖ वाक्यों द्वारा बार-बार अभ्यास करवाएँ।
- ❖ सभी बच्चों पर ध्यान दें। 'आपने सीखा' द्वारा पाठ के मुख्य बिंदुओं को दोहरवा लें।
- ❖ अभ्यास करवाने में सहायता करें।